ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -21 | अंक - 9 | अगस्त-I-2019 | (पाक्षिक) | माउण्ट आबू | Rs. 8.50

25 अगस्त, विश्व बंधुत्व दिवस पर विशेष...

परमात्मा की प्रकाश किरण दादी प्रकाशमणि

सफल नेतृत्व के साथ-साथ सबको हर पल-हर क्षण प्रेरणा दे, मानवता में एक नई जान फूंकने वाले चमत्कारी व्यक्तित्व की धनी, परमात्मा के कार्य को उन्हीं के समान करने के निमित्त हमारी दादी प्रकाशमणि जी थीं। जिन्होंने ना कभी किसी को कुछ कहा और ना ही कुछ करने के लिए विवश किया, उन्होंने सिर्फ कर्म किया और उनके कर्म ही सबके लिए प्रेरणा स्रोत बन गये। परमात्मा के नाम को प्रकाशित करने वाली, प्रकाश स्वरूप में प्रखर हो, जहान में ईश्वरीय परचम लहराया। ऐसे विरले व्यक्तित्व को हम सभी का सहृदय सम्मान व शत्-शत् नमन।

जिस समाज में नारी को सबने अपने तबके से अलग किया हुआ था, उनको देखने का एक दारिद्रय भाव, ऐसे में एक प्रकाश इस धरती पर आया और इस सृष्टि के प्रथम मानव को अपना आधार बनाया, जिससे नारी समाज को एक नया आयाम मिला। और नाम देता ब्रह्माकुमारियां। हरेक ब्रह्माकुमारी अलग-अलग विशेषताओं से ओत-प्रोत है। एक प्रज्ञ स्थिति वाली नारी ने परमात्मा के कार्य को चहुं ओर पहुंचाने का अलग तरह का कार्य किया। ब्रह्माकुमारीज़, समाज के हरेक मानव को जीवन जीने की एक शैली सिखाता है। इसकी प्रबल इच्छा लिये हमारी दादी प्रकाशमणि जी आगे बढ़ीं, समाज में उन वर्गों तक पहुंचीं, जहाँ एक आम व्यक्ति के लिए पहुंचना मुश्किल है। और सबको अपने स्नेह के पाश में बांधा।

दुनिया चाहे कुछ भी समझे, ये कोई आम घटना नहीं है या आम व्यक्तित्व नहीं है। ये एक वास्वविक कहानी है एक ऐसी आध्यात्मिक शक्तिशाली नारी की, जिन्होंने वो कर दिखाया जिसे आम जनमानस सोच भी नहीं सकता। दुनिया उन्हीं के पद चिन्हों पर चलती है, जिन्हें किसी में कुछ नया दिखता है या नये तरह का दिखता है। ऐसे एक चमत्कारिक व्यक्तित्व की धनी थीं हमारी दादी प्रकाशमणि जी। जिन्हें हर कोई चाहता, उनके गुणों को अपने में समाना चाहता, उनके समान बनना चाहता, उनका उदाहरण दूसरों को दे-दे कर सबको उनके समान बनाना चाहता। ऐसा व्यक्तित्व आज तक ना हमने कभी इन आँखों से देखा है और ना ही इन कानों से कभी सुना है। इतिहास में किये गये सामाजिक कार्य के बहुत सारे नाम दर्ज़ हैं लेकिन हमने उनको देखा नहीं है सिर्फ सुना है, लेकिन ये तो हमारी आँखों देखी घटना है। इसमें सबकुछ सटीक है, सही है, नया है। हो सकता है कि कहीं पर हम गलत भी हों, लेकिन जो हम कह रहे हैं वो सभी कहते भी हैं। हरेक ब्रह्माकुमार-कुमारी व अन्य समाज के लोग भी, दादी जी से एक बार जो मिल लेते थे वे उनकी महिमा करते नहीं थकते और पुनः पुनः उनसे मिलने की इच्छा व्यक्त करते। और उन्हें दादी द्वारा कोई बात कही जाती तो वे उन्हें सहजता से करने लग जाते। मानने वाली बात ये है कि ये दृष्टांत आने वाले समय में बहुतों को प्रेरणा देगा। इसमें सिर्फ दादी, उनके गुण, उनकी विशेषताएं और उनका सबकुछ समाया हुआ है। और हम ऐसी दादी के स्मृति दिवस पर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि देते हैं।

पाँचों महाद्वीपों में दादी के चरित्र की छाप और उस चरित्र की गाथा गाने वाले आज पूरे विश्व में कहीं न कहीं किसी न किसी स्थान पर सेवा कर रहे हैं। दादी जी के कर्त्तव्य आज हम आत्माओं के द्वारा जीवित व चित्रित हैं। ऐसी विदुषि सशक्त नारी, सम्पूर्ण मानव समाज को दिल खोलकर उस दिलाराम परमात्मा की याद दिलाने वाली करिश्माई व्यक्तिव की धनी आज भी इत्र की भांति सबके ज़हन में महक रही है। ऐसे पवित्र इत्र को हम कुछ शब्दों में, कुछ वाक्यों में, कुछ लाइनों में न चित्रित कर सकते हैं और ना चरितार्थ कर सकते हैं। बस कुछ प्रेरणाओं को जो हमारी दादी से हम सबको मिली, वो आपके सामने रख सकते हैं। तो ये विशेष अंक आप सभी पाठकों को इस लिए भी समर्पित है ताकि आप ऐसे व्यक्तिव को जानें और कैसे उन्होंने परमात्मा को प्रत्यक्ष किया, उसका चिंतन भी करें और उस चिंतन से कुछ अपने व्यक्तित्व को निखारने की हिम्मत जुटायें।